सत्यमेव - जयते

कृषि प्रौद्योगिकी प्रबन्धन अभिकरण (आत्मा) रामगढ़

झारखण्ड सरकार

मूँग

की वैज्ञानिक खेती

परियोजना निदेशक
आत्मा, रामगढ़

Web : www.atmaramgarh.org, E-mail : atmaramgarh@gmail.com

दलहनी फसलों में मूँग का स्थान प्रमुख है। लगभग 60–65 दिन में तैयार होने के कारण इस फसल की लोकप्रियता अधिक है। साथ ही यह फसल वर्ष भर रबी, खरीफ एवं ग्रीष्मकालीन फसल के रूप में अपनाई जा सकती है। हमारे देश में 75 प्रतिशत मूँग खरीफ में उगाई जाती है। मूँग के दाने में 25 प्रतिशत प्रोटीन पायी जाती है। अन्य दालों की तरह इस दाल को खाने के बाद वायु विकार या पेट में भारीपन की समस्या भी नहीं होती है। इस दलहनी फसल की महत्ता को ध्यान में रखते हुए आवश्यक है कि किसान भाई इसकी खेती को बेहतर रूप दें। मूँग की खेती में उन्नत कृषि तकनीक को अपनाकर किसान भाई भरपूर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

भूमि का चुनाव एवं तैयारी

मूँग की खेती सभी प्रकार की भूमि जहाँ पानी का निकास का अच्छा प्रबंध हो, सफलतापूर्वक की जा सकती है। खरीफ में मूँग की खेती के लिए दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है। खेत की तैयारी के लिए खेत को दो या तीन बार हैरो या देशी हल चलाकर अच्छी तरह जुताई कर लेते हैं। प्रत्येक जुताई के बाद पाटा चलाकर खेत को समतल कर लेना चाहिए। यदि खेत में दीमक का प्रकोप हो तो क्लोरोपायरीफास 1.5 प्रतिशत चूर्ण 8 किलो प्रति एकड़ की दर से आखिरी जुताई के समय खेत में मिला दें।

उन्नत किस्में

अच्छी उपज के लिए ऐसी प्रजातियों का चुनाव करना चाहिए जो अधिक उत्पादन दे सकें एवं पीला मोजैक रोग के लिए प्रतिरोधी हो।

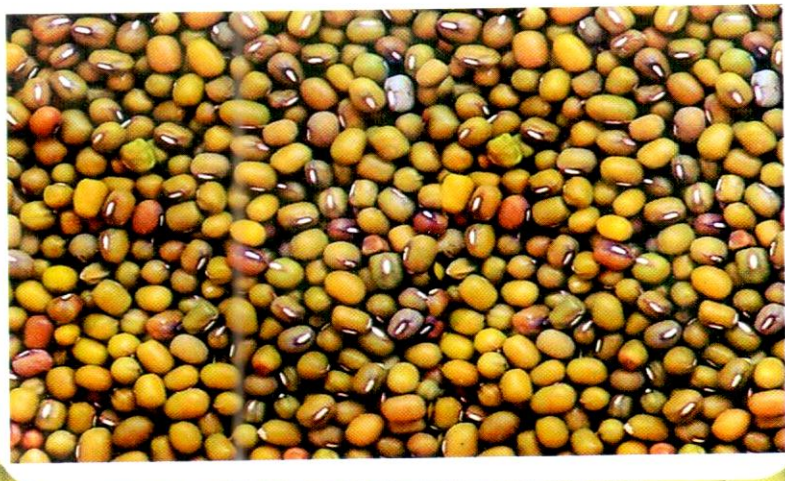

झारखण्ड के लिए अनुशंसित किस्में निम्नलिखित हैं :–

सुनयना

इस किस्म की उपज क्षमता 4.8–6.0 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह 60 दिनों में परिपक्व हो जाती है। इसके दाने चमकदार हरे रंग के होते हैं। यह खरीफ में बुआई के लिए बेहद लोकप्रिय है।

के - 851

इस किस्म की औसत उपज क्षमता 4.0–4.8 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह 60–65 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की सभी फलियाँ एक साथ पककर तैयार हो जाती है। अतः इसकी कटाई एक बार में हँसुए द्वारा की जा सकती है। यह किस्म ग्रीष्मकालीन एवं खरीफ में बुआई के लिए उत्तम है।

पी. एस. - 16

यह किस्म भी 60–65 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसकी औसत उपज क्षमता 3.2–4.0 क्विंटल प्रति एकड़ है। इसके दाने छोटे व चककदार हरे रंग के होते है।

पूसा विशाल

यह किस्म भी खरीफ में बुआई के लिए उत्तम है। इसकी औसत उपज क्षमता 4.0–4.8 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह 60–65 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके दाने हरे रंग के एवं मध्यम आकार के होते हैं।

बीज दर एवं बीजोपचार

मूँग की बुआई के लिए 10–12 किलो/एकड़ बीज की आवश्यकता होती है। बीज को बोने से पूर्व 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से थायर या बैविस्टीन नामक फफूंद नाशक दवा से उपचारित करें। इसके द्वारा उपचारित बीजों को 2 पैकेट (100 ग्रा. प्रति पैकेट) प्रति एकड़ की दर से राइजोबियम कल्चर से उपचारित करने के तुरंत बाद बुआई कर देनी चाहिए। राइजोबियम कल्चर से बीज को उपचारित करने के लिए 200 ग्राम गुड़ को एक लीटर पानी में डालकर पन्द्रह मिनट तक उबालें। अच्छी तरह ठंडा होने पर इस घोल में दो पैकेट राइजोबियम

कल्चर मिला दें। एक एकड़ के लिए पर्याप्त बीज को कल्चर के घोल में डालकर साफ हाथों से अच्छी तरह मिला दें। इसे साफ कपड़े या अखबार पर छाया में आधा घंटा तक सूखने दें। इस तरह से उपचारित बीजों की बुआई शीघ्र कर डालें।

बुआई

मूँग की बुआई जून के अन्तिम सप्ताह से लेकर जुलाई के अन्तिम सप्ताह तक की जा सकती है। मूँग की फसल की बुआई करते समय कतार से कतार की दूरी 30.45 से.मी. रखे तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी. रखे। बीज को 3–5 से.मी. गहराई पर बोना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक

फसल की अच्छी पैदावर हेतु 2.0–3.2 टन सड़ी गोबर की खाद प्रति एकड़ बुआई के 15 दिन पहले खेत में डाल दें। फसल की बढ़वार एवं उत्पादन प्राप्त करने हेतु प्रति एकड़ 8–10 किलो नाइट्रोजन, 20 किलो फॉस्फोरस तथा 8 किलो पोटाश की आवश्यकता होती है। इन उर्वरकों को बुआई के समय सीड कम फर्टीड्रिल के द्वारा बीज से लगभग 1–2 इंच गहराई में डालने से अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं।

जल प्रबंधन

खरीफ के मौसम में मुँग फसल को सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। जहाँ पर पानी भरने की समस्या हो वहाँ पर बुआई मेड़ो पर करनी चाहिए। ध्यान रहे बुआई के समय मिट्टी में नमी रहे। अधिक वर्षा होने पर जल निकास का उचित प्रबन्ध किया जाना जरूरी है।

खरपतवार नियंत्रण

आरम्भ में मूँग फसल की बढ़वार बुहत धीमी गति से होती है। इसलिए बुआई के 30–35 दिन तक खेत को खरपतवार से मुक्त रखना चाहिए। इसके लिए दो निराई, पहली बुआई के 20–25 दिन के बाद तथा दूसरी 35–40 दिनों बाद करनी चाहिए। रसायन द्वारा नियंत्रण के लिए बुआई के पहले एवं खेत की तैयारी के बाद बासालिन 45 प्रतिशत, 1 किलोग्राम सक्रिय तत्व का छिड़काव कर मिट्टी

में अच्छी तरह मिला देना चाहिए अथवा लासो 800 ग्राम सक्रिय तत्व का प्रति एकड़ की दर से बुआई के तुरन्त बाद छिड़काव करना चाहिए।

प्रमुख रोग एवं नियंत्रण

पीला मोजेक रोग :

इस रोग के लक्षण बुआई के एक महीने बाद ही दिखने लगते हैं। इसमें पत्तियाँ चितकबरी हो जाती है। रोगी पौधों में फूल एवं फलियाँ कम आती है। पौधों की परिपक्वता अवधि बढ़ जाती है। इस रोग के विषाणु सफेद मक्खी द्वारा फैलाये जाते हैं। रोग नियंत्रण हेतु मलाथियान नामक कीटनाशक की 1 मि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

भभूतिया रोग

इस रोग से ग्रसित पौधों की पत्तियों पर मटमैले रंग के पाउडर के समान धब्बे पड़ जाते हैं। पत्तियाँ पीली पड़कर झड़ जाती हैं तथा रोग ग्रसित पौधे धीरे–धीरे सिकुड़ जाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए सल्फर की 3 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।

प्रमुख कीट एवं नियंत्रण

फली छेदक :

यह कीट फलियों को छेदकर दानों को खाता है। इस प्रकार के दाने खाने लायक नहीं रहते हैं। इसके नियंत्रण हेतु इण्डोसल्फान 35 ई. सी. 2 मि. ली. प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

फली भंग

यह कीट पौधों की पत्तियों एवं फलियों को नुकसान पहुँचाता है। इसकी रोकथाम के लिए मोनोक्रोटोफॉस 36 एस. एल. की 260 से 480 मि. ली. को प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

कटाई एवं भंडारण

मूँग की फलियाँ गुच्छों में लगती हैं और पकने पर फलियों का रंग काला/भूरा होने लगता है। यही समय कटाई के

लिये उपयुक्त है। फलियाँ खेत में चटकने न पाये, इसके लिए पूरी फसल की 2–3 बार में तुराई करनी चाहिए। कटाई के बाद फसल को फर्श पर एकत्रित करके 4–5 दिन धूप में अच्छी तरह सुखा लेना चाहिए। अच्छी तरह सूखने के बाद डंडों से पीटकर दानों को साफ करके अलग कर लेना चाहिए। मूँग के दानों को धूप में सुखा कर भंडारण करना चाहिए।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें :

परियोजना निदेशक, आत्मा, रामगढ़

न्यू बिल्डिंग, ग्राउंड फ्लोर
सी–ब्लॉक, छतरमांडु, रामगढ़